जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

धर्म परिभाषा नहीं, प्रयोग है और जीवन है धर्म की प्रयोगशाला।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-20

वर्ष : 27, अंक : 6 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये, एकप्रति : 2/-

सम्पूर्ण भारतवर्ष में बाल संस्कार शिक्षण शिविरों की धूम

1. जयपुर (राज.): यहाँ दिनांक 16 से 30 मई, 2004 तक श्री दिगम्बर जैन महिला मण्डल अशोकनगर, सी-स्कीम की ओर से श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, सी-स्कीम में 50 वर्षों में प्रथम बार बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ।

दिनांक 16 मई को श्रीमती अनिताजी डांडिया के करकमलों द्वारा शिविर का उद्घाटन किया गया।

शिविर में पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ ने बालकों को बालबोध पाठमाला के माध्यम से धार्मिक व नैतिक संस्कार दिये ।

दिनांक 29 मई, 2004 को सभी बालकों की लिखित व मौखिक परीक्षा ली गई तथा दिनांक 30 मई, 04 को समापन समारोह के अवसर पर श्रीमती ललिता ठोलिया की अध्यक्षता एवं श्रीमती उमादेवी बारधाड़ के मुख्यातिथ्य में सभी बालकों को पुरस्कृत किया।

2. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, मालवीयनगर सेक्टर-7 में दिनांक 30 मई से 14 जून तक श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा पंचम बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

30 मई को श्री राजकुमारजी कासलीवाल द्वारा शिविर के उद्घाटन के पश्चात् श्री विनयकुमारजी पापड़ीवाल ने शिविर के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

शिविर में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित संजयजी सेठी शास्त्री एवं श्रीमती ज्योतिजी सेठी जयपुर तथा पण्डित ज्ञानचन्दजी शास्त्री कुड़ीला द्वारा बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 एवं छहढाला की कक्षा ली गई।

दिनांक 6 जून को रात्रि में श्री विमलजी जैन की अध्यक्षता में **कौन बनेगा धर्मराज** नामक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दिनांक 13 जून को सभी बालकों की परीक्षा ली गई तथा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में 14 जून को समापन समारोह में सभी उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

3. पार्श्वनाथ चिंतामणी (गुज.) : यहाँ दिनांक 1 से 6 मई, 04 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसरपर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित रजनीभाईजी दोशी हिम्मतनगर, पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा, पण्डित अमृतभाईजी मेहता फतेपुर, पण्डित मीठाभाईजी दोशी हिम्मतनगर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ इन विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ।

इस अवसरपर 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: पण्डित अभयकुमारजी द्वारा विधान की जयमाला पर एवं रात्रि में क्रिया-परिणाम-अभिप्राय पर मार्मिक प्रवचन हुए तथा ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना के दोनों समय अनेकान्त व स्याद्वाद एवं चरणानुयोग पर विशेष प्रवचन हुए।

दोपहर में व्याख्यानमाला तथा अभक्ष्य विषय पर कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। लगभग 450-500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

4. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा श्री पंचबालयती व विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय, साधनानगर में दिनांक 2 मई से 9 मई, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली के प्रवचनों का लाभ मिला।

बालकक्षायें पण्डित रीतेशकुमारजी शास्त्री सनावद, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी, पण्डित निखिलजी शास्त्री बण्ड़ा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, पण्डित विक्रांतजी शास्त्री झालरापाटन, पण्डित संभवजी शास्त्री नैनधरा, पण्डित अनुजजी जैन जयपुर, पण्डित अभयजी खड़ैरी, पण्डित अंकुरजी जैन दहेगाँव ने लीं।

ज्ञातव्य है कि आमंत्रित विद्वानों को इन्दौर के उपनगरों यथा- मल्हारगंज, राज मोहल्ला,

(शेष पृष्ठ 5 पर .....)

*** आमन्त्रण पत्र शीघ्र भेजें ***

दशलक्षण पर्व में प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेजें; ताकि तदनुसार निर्णय करके निर्धारित स्थानों की सूची 1 अगस्त, 2004 के अंक में प्रकाशित की जा सकें।

पत्र में अपना पूर्ण पता पिन कोड सहित तथा फोन नं. एस.टी.डी. कोड सहित अवश्य लिखें। यदि मोबाइल नं. हो तो वह भी लिखें।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

10 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा १३

दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणाण संभवदि।
अव्वदिरित्तो भावो दव्वगुणाणं हवदि तम्हा।।

(हरिगीत)

द्रव्य बिन गुण नहीं एवं द्रव्य भी गुण बिन नहीं।
वे सदा अव्यतिरिक्त हैं यह बात जिनवर ने कही।।

इस गाथा में ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुन्ददेव यह कहते हैं कि ह्न द्रव्य के बिना गुण नहीं होते तथा गुणों के बिना द्रव्य भी नहीं होते; इसलिए द्रव्य और गुणों में अभिन्नपना है, अभेदपना है।

टीकाकार अमृतचन्द्र आचार्य कहते हैं यहाँ द्रव्य और गुणों का अभेद दर्शाया है।

जिसप्रकार पुद्गलद्रव्य से पृथक् स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण नहीं होते, उसीप्रकार द्रव्य के बिना गुण नहीं होते और जिसप्रकार स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण से पृथक् पुद्गल द्रव्य नहीं होता; उसीप्रकार गुणों के बिना द्रव्य नहीं होता। इसलिए यद्यपि द्रव्य और गुणों का आदेशवशात् कथंचित् भेद है तथापि वे एक अस्तित्व में नियत होने के कारण परस्पर का एकपना नहीं छोड़ते, इसलिए वस्तुरूप से उनका भी अभेद है अर्थात् द्रव्य व पर्यायों की भाँति द्रव्य और गुणों का भी अभेद है।

इसी बात की पुष्टि में कविवर हीरानंदजी के निम्नांकित पद्य द्रष्टव्य हैं। वे कहते हैं ह्न

दरव बिना गुण नहिं रहैं गुण बिन दरव न होई।
अजुत भाव तातैं लसे, दरव-गुननमैं सोइ।।

अगले पद्य में कवि कहते हैं कि द्रव्य और गुणों में संज्ञा, संख्या एवं लक्षण आदि की अपेक्षा भेद कथन भी है; परन्तु उनमें प्रदेशभेद नहीं है। वे कहते हैं ह्न

दरव और गुन और यौं, जुदा करत आदेश।
वस्तु एक बरतै दुविधि जुदा न है परदेस।।
अनेकान्त विधि वस्तु है, जानै सम्यक् नैन।
एक पच्छ लहि गहि रहैं, मूढ़ न पावैं चैन।।

'द्रव्य अन्य है, गुण अन्य हैं' ह्न ऐसे भेद कथन से वस्तु दो प्रकार होते हुए भी वस्तु मूलत: एक ही है; क्योंकि द्रव्य और गुण में प्रदेश भेद नहीं है। सम्यक्दृष्टि तो वस्तु के ऐसे अनेकान्त स्वरूप को जानते हैं, किन्तु अज्ञानी उसके एक पक्ष को ही ग्रहण करते हैं, अत: उन्हें निराकुल सुख की प्राप्ति नहीं होती।

इस गाथा का स्पष्टीकरण करते हुए गुरुदेव श्री कानजी स्वामी अपने प्रवचन में कहते हैं कि ह्न ''अवस्था के बिना पदार्थ और पदार्थ के बिना अवस्था नहीं होती ह्न यह बात पिछली गाथा में कही गई है। इस गाथा में गुण व द्रव्य का अभेदपना कहकर वस्तु का स्वतंत्रपना बतलाते हैं। वे कहते हैं कि ह्न सत्तामात्र वस्तु के बिना सहभूतलक्षणरूप गुण नहीं होते और गुणों के बिना द्रव्य नहीं होता। इसकारण द्रव्य व गुण पृथक् नहीं है ह्न ऐसा ही वस्तु का स्वरूप है। जैसे ह्न पुद्गल द्रव्य से स्पर्श, रस, गंध एवं वर्णादि गुण पृथक् नहीं हैं, आम, नीम, नीबू आदि से उसका पीलापन, मीठापन, कड़वापन या खट्टापना आदि पृथक् नहीं होते, उसीप्रकार प्रत्येक द्रव्य के गुण द्रव्य से अपृथक् ही होते हैं, कभी भी पृथक् नहीं होते।''

प्रश्न ह्न द्रव्य से गुण पृथक् हैं ह्न ऐसा कोई नहीं मानता; फिर भी इस विषय को इतना विस्तार से स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता क्यों अनुभव की गई ?

उत्तर ह्न अरे भाई ! बौद्ध मतानुयायी तो ज्ञेय से ही ज्ञान का होना मानते हैं। वे कहते हैं जैसा ज्ञेय जानने में आया वैसा ही ज्ञान होता है। जो जैन ऐसा मानते हैं कि शास्त्र पढ़ने से या उपदेश सुनने से ज्ञान की अवस्था में वृद्धि हुई तो वे भी प्रच्छन्न बौद्ध ही हैं, क्योंकि वे आत्मा को और ज्ञान गुण को अभिन्न नहीं मानकर ज्ञेयों से ज्ञान का होना मानते हैं।

आचार्य उन जीवों पर करुणा करके कहते हैं कि ह्न ''अरे भाई ! तुम्हारे गुण तुमसे अलग नहीं हैं। जहाँ से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्यायें उत्पन्न होती हैं, वे श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र आत्मा के गुण हैं। यदि तुझे वे निर्मल पर्यायें प्रगट करनी होवें तो अन्तर्मुख होने से वे प्रगट होंगी। वे पर्यायें देव-शास्त्र-गुरु में से नहीं आयेंगी। हाँ, जब आत्मा में वे निर्मल पर्यायें प्रगट होंगी, तब देव-शास्त्र-गुरु निमित्तरूप अवश्य होंगे।''

इसप्रकार इस गाथा में द्रव्य और गुण का अभेद दर्शाया गया है। ●

गाथा १४

सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं।
दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि।।

(हरिगीत)

स्यात् अस्ति-नास्ति-उभय अर अवक्तव्य वस्तु धर्म हैं।
अस्ति-अवक्तव्यादि त्रय सापेक्ष सातों भंग हैं।।

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न वस्तुत: द्रव्य-कथन की अपेक्षा से स्यात् अस्तिरूप, स्यात् नास्तिरूप, स्यात् अस्ति-नास्ति (उभय) रूप है। तीनों धर्म एकसाथ कथन में न आने से वही वस्तु अवक्तव्य है। इसप्रकार वस्तु के चार भंग हुए। पुन: अवक्तव्य के साथ अस्ति, नास्ति तथा अस्ति-नास्ति लगाने से तीन भंग और हो जाते हैं, जो इसप्रकार हैं ह्न स्यात् अस्ति अवक्तव्य, स्यात् नास्ति अवक्तव्य तथा स्यात् अस्ति-नास्ति अवक्तव्य। इसप्रकार वस्तु का कथन सात भंगरूप होता है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि द्रव्य के आदेश (कथन) के वश से वस्तु को उपर्युक्त रूप से सात भंगों में कहा गया है। यहाँ सप्तभंगी

में सर्वथापने अर्थात् एकान्त का निषेधक एवं अनेकान्त का द्योतक 'स्यात्' शब्द कथंचित् अर्थात् किसी अपेक्षा के अर्थ में अव्यय रूप से प्रयुक्त हुआ है। टीकाकार ने सातों भंगों को विस्तार से समझाया है, जो मूलत: पठनीय है।

पण्डितप्रवर जयचन्दजी छाबड़ा के शब्दों में भावार्थ यह है कि ह्न १. द्रव्य स्वचतुष्टय (स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल एवं स्वभाव) की अपेक्षा से है। २. द्रव्य परचतुष्टय की अपेक्षा नहीं है। ३. द्रव्य क्रमश: स्वचतुष्टय और परचतुष्टय की अपेक्षा से 'है और नहीं' है। ४. द्रव्य युगपद् स्वचतुष्टय की और परचतुष्टय की अपेक्षा 'अवक्तव्य' है। ५. द्रव्य स्वचतुष्टय की और युगपद् ह्न स्व-पर चतुष्टय की अपेक्षा से 'है और अवक्तव्य है।' ६. द्रव्य परचतुष्टय और युगपद् स्व-परचतुष्टय की अपेक्षा से 'नहीं है और अवक्तव्य है।' ७. द्रव्य स्वचतुष्टय, परचतुष्टय और युगपत् स्व-परचतुष्टय की अपेक्षा से 'है, नहीं है और अवक्तव्य है।' ह्न इसप्रकार यहाँ सप्तभंगी कही गई है।

ज्ञातव्य है कि सप्तभंगी का कथन दो प्रकार से होता है। नय सप्तभंगी और प्रमाण सप्तभंगी।

एक धर्म के द्वारा एक धर्म को ही देखना नय सप्तभंगी है और एक धर्म के द्वारा सम्पूर्ण द्रव्य को देखना प्रमाण सप्तभंगी है।

इस संदर्भ में कविवर हीरानन्दजी का निम्नांकित पद्य द्रष्टव्य है ह्न

(सवैया इकतीसा)

अपनैं चतुष्टयसौं अस्ति द्रव्य सदाकाल,
परकै चतुष्टयसौं नासति विसेखिए ।
अस्ति नास्ति दौनौंरूप क्रम परिपाटी विषै,
समकाल दौनौं तातैं अवाचीक लेखिए।।
अस्तिक्रम अवाचीक दौनौं एक भंग लसै,
नास्तिक्रम अवाचीक छट्ठा भंग पेखिए ।
अस्तिक्रम नास्तिक्रम अवाचीक एक तीनौं,
भंग सात सेती वानी जैनग्रन्थ देखिए।।

द्रव्य सदाकाल अपने चतुष्टय से अस्तिरूप है तथा परचतुष्टय से नास्तिरूप है। क्रम परिपाटी से देखें तो अस्ति-नास्तिरूप है। दोनों समकाल होने से अवक्तव्य है। उपर्युक्त प्रकार से शेष तीन भंग भी लगा लेना चाहिए।

इस विषय का स्पष्टीकरण करते हुए गुरुदेवश्री कानजी स्वामी कहते हैं कि ह्न ''इस गाथा में सप्तभंगी का स्वरूप कहा है। प्रत्येक पदार्थ का स्वरूप सुयुक्ति से सिद्ध करते हैं। यहाँ पंचास्तिकाय में प्रमाण सप्तभंगी है और प्रवचनसार में नय सप्तभंगी की बात की है।

अनेकान्त का स्वरूप पदार्थविवक्षावश से सात प्रकार का है। वे सात भंग निम्नप्रकार हैं ह्न १. किसी एक अपेक्षा से द्रव्य अस्तिरूप है। २. किसी अपेक्षा से वही द्रव्य नास्तिरूप है। ३. किसी अपेक्षा से अस्ति-नास्तिरूप है। ४. किसी अपेक्षा से वचनगोचर नहीं है, अत: अवक्तव्य है। ५. किसी अपेक्षा से अस्तिरूप अवक्तव्य है। ६. किसी अपेक्षा से नास्तिरूप अवक्तव्य है और ७. किसी अपेक्षा से अस्ति-नास्तिरूप अवक्तव्य है।

वीतरागदेव ने अनन्तधर्मात्मक द्रव्य के स्वरूप को बतलाने के लिए सप्तभंगी का यह स्वरूप कहा है।''

न केवल जन साधारण में बल्कि जैनेतर दार्शनिकों में भी जैनदर्शन के इस अद्वितीय, अनुपम और वस्तुस्वरूप के यथार्थ प्रतिपादक अनेकान्त सिद्धान्त और स्याद्वाद शैली के संबंध में बहुत भारी भ्रान्ति है। अधिकांश समाज सुधारक राष्ट्रीय एकता के पक्षधर व्यक्ति अनेकान्त और स्याद्वाद की व्याख्या समन्वयवाद के रूप में करते हैं, जो कहने-सुनने में तो अच्छा लगता है; परन्तु अनेकान्त और स्याद्वाद दर्शन वस्तुत: दो परस्पर विरोधी धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विचारों में समझौता करानेवाला दर्शन नहीं है; क्योंकि समझौते में सौदेबाजी होती है, उसमें दोनों पक्षों को झुकना पड़ता है, अपने-अपने विचारों से थोड़ा-बहुत हटना पड़ता है; जबकि अनेकान्त और स्याद्वाद एक दर्शन है, इसमें यह सब संभव नहीं है। वस्तुस्वरूप का प्रतिपादक यह एक अकाट्य सिद्धान्त है।

उदाहरण के लिए हम स्याद्वाद के दृष्टिकोण से अथवा एक नय के दृष्टिकोण से देखें कि ह्न एक व्यक्ति अपनी पत्नी का पति ही है, भाई आदि अन्य कुछ भी नहीं। वही अपनी बहिन का भाई ही है, पिता का पुत्र ही है, मामा का भानजा ही है, अन्य कुछ भी नहीं। इसे ही हम प्रमाण की दृष्टि से ऐसा भी कह सकते हैं कि वह किसी का पति भी है, किसी का भाई भी है, किसी का पुत्र भी है और किसी का पिता भी है। ये सब धर्म उसमें हैं; परन्तु ऐसा संभव नहीं है कि एक ही व्यक्ति को पत्नि का भाई भी मान लो और उसे ही उसी का पिता-पुत्र आदि भी मान लो। अत: इसमें सही समझ की ही जरूरत है, समझौते की नहीं। ●

पंचास्तिकायसंग्रह : पद्यानुवाद

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

उत्पाद-व्यय से रहित केवल सत् स्वभावी द्रव्य है।
द्रव्य की पर्याय ही उत्पाद-व्यय-ध्रुवता धरे।।11।।
पर्याय विरहित द्रव्य नहीं नहि द्रव्य बिन पर्याय है।
श्रमणजन यह कहें कि दोनों अनन्य-अभिन्न हैं।।12।।
द्रव्य बिन गुण नहीं एवं द्रव्य भी गुण बिन नहीं।
वे सदा अव्यतिरिक्त हैं यह बात जिनवर ने कही।।13।।
स्यात् अस्ति-नास्ति-उभय अर अवक्तव्य वस्तु धर्म हैं ।
अस्ति-अवक्तव्यादि त्रय सापेक्ष सातों भंग हैं।।14।।
सत्द्रव्य का नहिं नाश हो अरु असत् का उत्पाद ना।
उत्पाद-व्यय होते सतत सब द्रव्य-गुणपर्याय में।।15।।
जीवादि ये सब भाव हैं जिय चेतना उपयोगमय।
देव-नारक-मनुज-तिर्यक् जीव की पर्याय हैं।।16।।
मनुज मर सुरलोक में देवादि पद धारण करें।
पर जीव दोनों दशा में ना नशे ना उत्पन्न हो।।17।।
जन्मे-मरे नित द्रव्य ही पर नाश-उद्भव न लहे।
सुर-मनुज पर्यय की अपेक्षा नाश-उद्भव हैं कहे।।18।।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

लवाण (राज.): यहाँ दिनांक 14 मई से 16 मई, 2004 तक श्री दिगम्बर जैन छोटा मन्दिर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठाचार्य पण्डित पूरनचन्दजी जैन, सोनागिर ने झण्डारोहण, शांतिजाप विधि के पश्चात् पंचपरमेष्ठी एवं यागमण्डल विधान सम्पन्न कराया। दिनांक 16 मई को वेदीशुद्धी के पश्चात् जिनेन्द्र रथयात्रा निकालकर वेदी में भगवान विराजमान किये गये।

इस अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर एवं पण्डित चिदानन्दजी जैन, अशोकनगर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ भी समाज को प्राप्त हुआ।

पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री, मौ द्वारा रात्रि में संगीतमय भक्तिसंध्या के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न गोकुलचंद जैन**

रत्नत्रय मण्डल विधान एवं कलशारोहण सम्पन्न

भीण्डर (राज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जिनमन्दिर के स्वर्णजयंति के शुभअवसर पर दिनांक 20 मई से 24 मई, 2004 तक अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं दि. जैन तेरापंथ समाज, भीण्डर के सहयोग से श्री रत्नत्रय मण्डल विधान एवं कलशारोहण सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 20 मई को विधान का उद्घाटन श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर ने तथा झण्डारोहण श्री भंवरलालजी चेतनजी लूणदिया ने किया। उद्घाटन-सभा की अध्यक्षता पन्नालालजी नागदा ने की।

इस अवसर पर पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी परतापुर, पण्डित वीरेन्द्रजी डडूका, पण्डित हेमन्तजी उदयपुर, पण्डित निलयजी टीकमगढ़, पण्डित गणतंत्रजी खरगापुर एवं पण्डित जिनेन्द्रजी जैन उदयपुर आदि का लाभ समाज को मिला।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री के टेप प्रवचन एवं पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित धनसिंहजी के समयसार कलश पर डॉ. महावीरप्रसादजी जैन के द्रव्य-गुण-पर्याय एवं पण्डित राकेशजी दोशी के सम्यग्दर्शन का राजमार्ग विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त पण्डित हेमन्तजी शास्त्री एवं जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा बालकक्षा ली गई।

रात्रि में प्रवचन के पश्चात् अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये; जिसमें शाखा पिड़ावा द्वारा मंचित नाटक **अकलंक-निकलंक** उल्लेखनीय रहा।

दिनांक 23 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का संभागीय अधिवेशन डॉ. महावीरप्रसादजी जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्यअतिथि पं. मांगीलालजी केरोत लूणदा थे। कार्यक्रम में राजस्थान की 11 शाखाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

इस अवसर पर लगभग 2000 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान के अनेक आजीवन सदस्य बने तथा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर को साहित्य की कीमत कम करने हेतु 34 हजार 765 रुपये प्राप्त हुये। **ह्न मांगीलाल जैन**

24 स्थानों पर ग्रुप शिविर सानन्द सम्पन्न

अलीगढ़ (उ.प्र.): तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ की ओर से उत्तरप्रदेश के विभिन्न 24 नगरों में दिनांक 28 मई से 03 जून, 2004 तक सामूहिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में मेरठ, सरधना, खतौली, मुजफ्फरनगर, देवबन्द, रुडकी, खेकडा, एटा, कुरावली, भोगाँव, मैनपुरी, करहल, जसवन्तनगर, गँगेरु, लुधपुरा, एत्मादपुर, सैमरा, सासनी, अलीगढ़, शिकारपुर, सिकन्दराबाद, बरहन, रामपुर मणिहारन एवं कैराना के लगभग 2200 बालक-बालिकाओं एवं 2000 साधर्मी भाई-बहिनों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर में पण्डित कैलाशचन्दजी जैन, श्री पवनजी जैन, पण्डित राकेशजी शास्त्री, श्रीमती स्वर्णलताजी जैन, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित संजयजी शास्त्री, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, पण्डित अनीलजी बेलोकर, पण्डित वीरेन्द्रजी वीर, विदुषी सुधाबेन, पण्डित आकाशजी, पण्डित अनीशजी, पण्डित चैतन्यजी सातपुते, पण्डित देवेन्द्रजी बंड, पण्डित सुनीलजी बेलोकर, पण्डित दीपकजी डाँगे, पण्डित चन्द्रप्रभातजी शास्त्री, पण्डित अनंतवीरजी जैन, पण्डित अरहंतवीरजी जैन, पण्डित अनुरागजी जैन, पण्डित निखिलजी जैन एवं पण्डित अर्पितजी जैन का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

ब्र. कल्पनाबेन द्वारा धर्मप्रभावना

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 1 मार्च से 11 अप्रैल, 2004 तक लगभग डेढ़ माह ब्र. कल्पनाबेन, जयपुर के प्रतिदिन तीनों समय प्रवचनों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। प्रात: प्रवचनसार की 80वीं गाथा, दोपहर में न्यायदीपिका तथा रात्रि में समयसार की 14वीं गाथा पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रतिदिन रात्रि में प्रश्नमंच होता था।

जयधवल ग्रन्थ पर वाँचना सम्पन्न

बीना (म.प्र.) : यहाँ ब्र. विमलाबेन, जयपुर द्वारा प्रतिदिन दोनों समय जयधवल ग्रन्थ (भाग-1) पर वाँचना की गई। साथ में ब्र. यशपालजी जैन एवं पण्डित श्रेयांसकुमारजी के सान्निध्य में इसी ग्रन्थ पर विशेष स्पष्टीकरण से समाज ने इसे आद्योपान्त सुना एवं पढ़ा तथा ग्रन्थ की जटिलता भी सरल महसूस की। रात्रि में छहढाला पर प्रवचन हुये।

श्री बाबूलालजी जैन मधुर, कु.नमिता, कु. गीता, कु. श्वेता एवं पं.सुदीपजी व पं. सुदर्शनजी का पठन-पाठन में विशेष सहयोग रहा।

नियमसार प्रवचन छपकर तैयार

आचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार पर हुये गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस से भरपूर प्रवचनों का हिन्दी अनुवाद **'प्रवचनरत्न चिंतामणि (भाग-1)'** का प्रकाशन आचार्य कुन्दकुन्द शिक्षण संस्थान ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा किया गया है।

गुरुदेवश्री की जन्मजयन्ती के अवसर पर दिनांक 21 अप्रैल को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल की उपस्थिति में श्री मुकुन्दभाई खारा के करकमलों से इसका विमोचन किया गया। 636 पृष्ठीय ग्रन्थ का मूल्य मात्र 50/- रुपये रखा गया है। **ह्न बसन्तभाई दोशी**

(पृष्ठ 1 का शेष ....)

अंजनि नगर, गांधीनगर, रामचन्द्र नगर में सायंकालीन व्याख्यान के लिये बुलाया गया।

सभी कार्यक्रम पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुये। शिविर संयोजक श्री विजयकुमारजी बड़जात्या एवं श्री ललितजी बड़जात्या थे। **ह्न मनोहरलाल काला**

5. **दाहोद (गुज.) :** यहाँ दिनांक 20 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

सभी कार्यक्रम पण्डित राकेशजी दोशी के निर्देशन में सम्पन्न हुये। शिविर संयोजक श्री दीपकजी जैन थे। प्रतिदिन प्रात: सी.डी. के माध्यम से गुरुदेवश्री का जीवन परिचय दिखाया गया।

दोपहर में व्याख्यान माला एवं लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा चली। रात्रि में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के समयसार पर प्रवचन हुये।

6. **कानपुर (उ.प्र.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संचालित जैनाचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट एवं अ. भा.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 23 मई से 30 मई, 2004 चतुर्थ बाल युवा संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर में प्रतिदिन सामूहिक जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् पण्डित किशनचन्दजी जैन अलवर द्वारा करणानुयोग की विशेष कक्षा ली गई। बालकों के लिये बालबोध पाठमाला भाग-1, 2 तथा प्रौढ़ वर्ग के लिये तत्त्वज्ञान पाठमाला एवं निमित्त उपादान की कक्षा चलाई गई।

इस अवसर पर पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिल शास्त्री भोपाल, पण्डित अनुभवजी शास्त्री एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। श्री पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन श्री जितेन्द्रजी जैन द्वारा किया गया।

दिनांक 30 मई को शिविर समापन पर सभी बालकों की परीक्षा ली गई तथा योग्यतानुसार छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

ज्ञातव्य है कि नगर के अनेक क्षेत्रों में पण्डित अनिलजी 'धवल' द्वारा साप्ताहिक कक्षायें ली जा रही है; जिनमें 150 विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। **ह्न केशवदेव जैन**

7. **हिंगोली (महा.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज द्वारा श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में दिनांक 2 जून से 9 जून, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित अमोलजी संघई हिंगोली, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले, पण्डित आशीषजी रोकडे, पण्डित प्रजयजी कान्हेड एवं पण्डित सचिनजी गोरे का सानिध्य प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन प्रात: जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् बालकों एवं प्रौढ़ों के लिए बालबोध पाठमाला भाग 1,2,3 तथा द्रव्य-गुण-पर्याय की कक्षा चली। दोपहर में द्रव्यसंग्रह की विशेष कक्षा ली गई।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर, काटोल के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए तथा अन्य विद्वानों के विविध विषयों पर हुए प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला।

दिनांक 9 जून को सभी बालकों की परीक्षाएँ ली गई एवं रात्रि में श्री रेणुकादासजी दोडल, श्री सुदर्शनजी दोडल आदि की उपस्थिति में सभी को पुरस्कृत किया गया। **ह्न कु. दीपाली कान्हेड**

प्रशिक्षण शिविर का प्रभाव

खैरागढ़ (छ.ग.): पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण प्राप्त कर खैरागढ़ निवासी कु. समता जैन ने यहाँ स्थानीय दिग. जैन मंदिर में प्रतिदिन सायंकाल बालकक्षा प्रारंभ की है, जिसमें लगभग 20 बच्चे भाग ले रहे हैं।

खैरागढ़ मुमुक्षु मण्डल कु. समता जैन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के अतिरिक्त पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का बहुत आभारी है। ट्रस्ट द्वारा शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से घर-घर विद्वान बनाने का अभूतपूर्व कार्य किया जा रहा है। **ह्न दुलीचंद जैन**

सन् 2006 में श्रवणबेलगोला में बारहवर्षीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव

वर्ष 2006 में श्रवणबेलगोला में स्थित विश्वप्रसिद्ध भगवान बाहुबली की 57 फीट ऊँची अतिमनोज्ञ प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होगा। ज्ञातव्य है कि प्रत्येक 12 वर्ष में होनेवाला यह आयोजन जैन समाज के महाकुम्भ के रूप में प्रतिष्ठित है।

श्रवणबेलगोला मठ के कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने इस समिति में टाइम्स ऑफ इण्डिया ग्रुप के पूर्व कार्यकारी निदेशक श्री साहू रमेशचन्दजी जैन, दिल्ली को अध्यक्ष एवं समाजसेवी श्री अशोकजी बड़जात्या, इन्दौर को उपाध्यक्ष मनोनीत किया है।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओरसे आपको हार्दिक बधाई !

छपते-छपते...

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दि.जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर में अध्ययनरत उपा. वरिष्ठ (12 वीं) एवं उपा. कनिष्ठ (11 वीं) के छात्रों का माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है।

उपा. वरिष्ठ (12 वीं) कक्षा में महाविद्यालय के 18 छात्रों ने प्रथम श्रेणी तथा 13 छात्रों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की; जिसमें रोहन रोटे कोल्हापुर, प्रशांत उखलकर रिसोड़ एवं नयन शाह सिकन्दराबाद ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया।

उपा. कनिष्ठ में नितिन जैन सेमारी, प्रसन्न शेटे कोल्हापुर एवं कु.परिणती पाटील जयपुर ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार द्वारा उक्त छात्रों का हार्दिक अभिनन्दन ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 9

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

चौथा प्रवचन

भगवान की दिव्यध्वनि के सार प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन नामक महाधिकार पर चर्चा चल रही है; जिसमें ज्ञानाधिकार के अंतर्गत सर्वज्ञता के स्वरूप पर विचार चल रहा है।

जो कुछ भी जगत में है; उस सबको पूरी तरह से जानना ही ज्ञान का स्वभाव है। केवलज्ञान, ज्ञान की वह स्वभावपर्याय है जो कि पूर्ण रूप से विकसित होकर प्रगट हो गई है।

इस सन्दर्भ में 37वीं गाथा महत्त्वपूर्ण है ह्न

तक्कालिगेव सव्वे सदसब्भूदा हि पज्जया तासिं।
वट्टन्ते ते णाणे विसेसदो दव्वजादीणं ।।37।।

उन जीवादि द्रव्यसमूहों की सभी विद्यमान-अविद्यमान पर्यायें वास्तव में वर्तमान पर्यायों की भाँति विशिष्ट रूप से उस ज्ञान में वर्तती हैं।

यहाँ यह कह रहे हैं कि दर्पण में तो जो पदार्थ सामने हो, मात्र उसी की केवल वर्तमान पर्याय ही दिखाई देती है; किन्तु केवलज्ञान में तो सभी पदार्थों की भूतकाल में होकर नष्ट हो गईं सभी पर्यायें और भविष्यकाल में होनेवाली सभी पर्यायें भी वर्तमान पर्याय के समान ही स्पष्ट एकसाथ दिखाई देती हैं।

भगवान बुद्ध के सन्दर्भ में एक उदाहरण आता है कि उन्होंने एक जर्जर बुजुर्ग महिला को देखा। उसे निहारने के बाद उनके दिमाग में एकदम यह विचार आया कि **'देखी मैंने, आज जरा।'** मैंने आज बुढ़ापा देखा है। **'क्या ऐसी हो जाएगी मेरी यशोधरा ?'** वे सोचने लगे कि क्या एक दिन मेरी पत्नी यशोधरा भी ऐसी ही हो जाएगी ?

बारह भावना : एक अनुशीलन का मुखपृष्ठ इसी घटना से प्रेरित है। इसमें मानवदेह की विविध अवस्थाओं को दर्शाया गया है। बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक की सभी अवस्थाएँ इसमें हैं। जो जिस अवस्था का है, वह उस अवस्था के भूत तथा भविष्यकाल की अवस्था को इसमें देख सकता है।

तात्पर्य यह है कि आप इसे देखकर अपनी भूत-भावी पर्यायों की कल्पना कर सकते हैं।

यह तो मतिज्ञान की बात है। **केवलज्ञान में ऐसा नहीं है कि वर्तमान की पर्याय साफ दिखाई दे रही हो और भविष्यकाल की तथा भूतकाल की पर्यायों की हमने कल्पना की हो। यह कल्पनालोक की उड़ान नहीं है, अनुमान नहीं है, अंदाज नहीं है। केवलज्ञान में तो जैसी वह वस्तु है, वैसी ही प्रत्यक्ष दिखाई दे रही है। केवलज्ञान में सब जाति के सभी द्रव्यों की प्रत्येक पर्याय वर्तमान के समान दिखाई देती है।**

दर्पण में बहुत स्थूलता है, अपने चेहरे की बहुत-सी बारीकियाँ उसमें दिखाई नहीं देती; परन्तु केवलज्ञान में तो सब पदार्थों की अनादि-अनंत पर्यायें अपनी पूरी बारीकियों के साथ एक साथ झलकती हैं।

अतीन्द्रियज्ञान का स्वरूप स्पष्ट करनेवाली प्रवचनसार की ये गाथाएँ णमोकार महामंत्र जैसी गाथाएँ हैं; क्योंकि इनमें अरहंत भगवान के जो ज्ञानपर्याय प्रगट हुई है; उसका बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

यहाँ आचार्य कह रहे हैं कि एक-एक समय की एक-एक पर्याय ह्न इसप्रकार अनादिकाल से लेकर अनंतकाल तक की सभी पर्यायें उस द्रव्य की स्वरूपसम्पदा हैं।

यदि कोई कहे कि एक-एक क्षण में बदलना पड़ता है ह्न यह तो बहुत परेशानी का काम है। हम दौड़ते ही रहें, दौड़ते ही रहें।

उससे ही आचार्य कह रहे हैं कि अरे भाई ! यह विपत्ति नहीं है, सम्पत्ति है। यह अपने स्वरूप की सम्पदा है।

हम दाल बनाते हैं तो उसमें मिर्ची, नमक, जीरा सब मिला हुआ लगता है; लेकिन उसमें एक-एक चीज अलग-अलग है। यद्यपि वे हमें मिश्रित दिखाई देती हैं; तथापि वे अलग-अलग ही हैं।

क्या केवलज्ञान में भी वे ऐसी ही मिश्रित दिखाई देती होंगी ? **अरे भाई! वे मिश्रित होने पर भी केवलज्ञान में अमिश्रित ही दिखाई देती हैं। मिली हुई होने पर भी सब द्रव्यों की सब पर्यायें एकदम स्पष्ट दिखाई देती हैं; उसमें किसी भी प्रकार की अस्पष्टता नहीं होती।**

जब हम जयपुर का नक्शा बनाते हैं तो उसमें पण्डित टोडरमल स्मारक भवन की स्थिति एक बिन्दु जैसी होती है। एक पेन्सिल के नोक पर जितना स्थान होता है, उतना ही स्थान टोडरमल स्मारक भवन का होता है। परन्तु हम इसी भवन को जयपुर के नक्शे में एन्लार्ज (बड़ा) करके दिखाते हैं; क्योंकि इससे रेलवे स्टेशन से टोडरमल स्मारक भवन कैसे पहुँचा जाय ह्न यह बताना अभीष्ट है। हमने उस स्थान को प्रयोजनवश बड़ा बताया है; परन्तु वस्तुस्थिति में वह बड़ा नहीं है। यदि कोई व्यक्ति उस स्थान को पूरे जयपुर के अनुपात से जितना हमने बताया है, उतना ही मानने लग जाय तो गलती ही करेगा।

ऐसे ही जो व्यवहार हमारे श्रुतज्ञान में प्रवर्तित हुआ है; वह केवलज्ञान में नहीं है। केवलज्ञान में व्यवहार की जरूरत नहीं होती; क्योंकि नय श्रुतज्ञान में ही होते हैं। **हम हमारे श्रुतज्ञान की तरफ से कहते हैं कि केवल – ज्ञान पर को व्यवहार से जानता है और स्व को निश्चय से जानता है।**

ये विवक्षा श्रुतज्ञान की तरफ से है; उस केवलज्ञान में तो स्व व पर दोनों एकसाथ जैसे हैं, वैसे झलकते हैं। महासत्ता की अपेक्षा एकता और अवान्तर सत्ता की अपेक्षा जो पृथकता दिखती है; यह सब हमारे ज्ञान में प्रवर्तित नयप्रयोग है।

जब अनुभव के काल में भी नय नहीं रहते हैं; तब केवलज्ञान होने पर नय कैसे रहेंगे ? ध्यान के काल में भी नय नहीं है।

मैं यहाँ बैठकर प्रवचन कर रहा हूँ और यह सामनेवाला व्यक्ति फिल्म बना रहा है। यह फिल्म बनानेवाला व्यक्ति मुख्य-गौण करेगा। मैं यहाँ अपनी जगह बैठा रहूँगा और आप अपनी जगह बैठे रहेंगे; सभी अपनी-अपनी जगह अपनी-अपनी हैसियत से बैठे रहेंगे।

उस कैमरामेन ने वक्ता के चेहरे पर कैमरा फिक्स कर दिया या किसी श्रोता के चेहरे पर कैमरा फिक्स कर दिया। वह किसी एक श्रोता का चेहरा बड़ा कर दे, किसी श्रोता का चेहरा दिखाए ही नहीं, दूर से ही दिखाए अथवा पीछे से दिखाए। यह सब मुख्य-गौण उस कैमरा में हो रहा है। इस हॉल में बैठे हुए लोगों की जो स्थिति है, उसमें कोई मुख्य-गौण नहीं हुआ है; वह स्थिति तो जैसी थी, वैसी ही है।

डॉक्टर ने आपकी बीमारी की जाँच की। उसने जो बीमारी है; उसमें कोई मुख्य-गौण नहीं किया। उसके समझ में सब आ गया है ह्न यह उसका प्रमाणज्ञान है। फिर जब डॉक्टर से मरीज बार-बार पूछता है कि क्या बात है; तब वह गौण करता है और कहता है कि 'कोई बात नहीं है; आप बिल्कुल ठीक हैं, कोई दिक्कत नहीं है। बस! दो गोली रोजाना लेना, ठीक हो जाओगे।

इसप्रकार उसने जो नहीं बताया है और ठीक है-कह रहा है; वह सिर्फ वाणी में हो रहा है। जो वस्तु व ज्ञान में है, उसमें कुछ भी फर्क नहीं आया है।

जब वही डॉक्टर घरवालों से कहता है कि स्थिति बहुत खतरनाक है। अब तो राम का नाम लो, हमारा कुछ काम नहीं है। ये जो दवाईयाँ लिख दी हैं, वह मरीज के संतोष के लिए लिखी हैं। ये तो ताकत और दर्द की दवाईयाँ है। इससे कुछ भी होनेवाला नहीं है।

यह जो डॉक्टर की वाणी में फर्क आया है, वह वाणी के स्तर पर ही आया है; वस्तु के स्तर पर, जानने के स्तर पर नहीं। जो वस्तु की स्थिति है, उसमें नय कहाँ है ? ये नय तो श्रुतज्ञान में हैं, वाणी में हैं।

हमने विभिन्न नयों से जो निरूपण किया, वह सब हमने वस्तु पर लाद दिया। जैसे, तुम्हें देखकर हमें गुस्सा आता है तो हम यह मानने लगते हैं कि गुस्से का कारण तुम हो। हमने ही ऐसी धारणा बना रखी है। हमने ऐसा मान लिया है कि इनकी शक्ल ही ऐसी है कि जिसे देखकर गुस्सा आता है।

यह कहता है कि कुछ लोगों की शक्लें ऐसी होती हैं कि देखते ही गुस्सा आता है और कुछ लोगों की ऐसी होती हैं कि देखते ही प्रेम उमड़ता है। उससे कहते हैं कि अरे भाई ! यह तो तेरे अंदर का राग है। आदमी की शक्ल ने कुछ भी नहीं किया है। किसी भी आदमी की शक्ल कुत्ते और बिल्ली से अधिक खराब तो नहीं होती है, गाय और भैंस से अधिक खराब तो नहीं होती ? लोगों को तो कुत्ते-बिल्ली, गाय-भैंस को देखकर भी प्रेम उमड़ता है। वे उन्हें गोदी में लिए फिरते हैं।

शक्ल अच्छी या खराब होने से राग-द्वेष का क्या संबंध ? यह राग-द्वेष तो इसके अन्दर की ही विकृति है।

जैसे हम कहते हैं कि यह मेरा पुत्र परमात्मप्रकाश है। मैं यहाँ उपस्थित सभी छात्रों को अपने पुत्र परमात्मप्रकाश जैसा ही देखता हूँ। सबको परमात्मा ही देखता हूँ। द्रव्य से तो सभी परमात्मा हैं ही और पर्याय से मेरा बेटा परमात्मप्रकाश जैसा है; वैसे ही आप सबको देखता हूँ।

यह कथन मैंने मेरे हृदय में आपके प्रति जो स्नेह है, उसे व्यक्त करने के लिए किया है। अंदर में तो यह भेदविज्ञान विद्यमान है कि वह मेरा बच्चा है और आप मेरे बच्चे नहीं हैं।

ऐसे ही सर्वज्ञ भूत और भविष्य को वर्तमानवत् जानते हैं, वर्तमान नहीं। ऐसा इसलिए कहा गया है कि उनके जानने में कोई अस्पष्टता नहीं है, धुँधलापन नहीं है। ज्ञान तो उसी का नाम है, जिसमें सम्पूर्ण स्थिति स्पष्ट दिखाई दे।

चित्रपट में भी ऐसा होता है। एक ही चित्र में पूर्वभव, परभव और वर्तमान भव का चित्रण होता है। ऐसा चित्र होता है, जिसमें एक तरफ मारीच बैठा है, शेर बैठा है और दूसरी तरफ भगवान महावीर का चित्र है। ऐसे ही केवलज्ञान में भी, एक ही ज्ञान में अनेक भव एकसाथ दिखते हैं।

हमारे श्रुतज्ञान में भी ऐसा ही होता है। श्रुतज्ञान तो परोक्ष है; परन्तु केवलज्ञान में सब प्रत्यक्ष होता है।

जैसे हम पूछते हैं कि ह्न 'आपके घर से मंदिर कितनी दूर है' तब आप तुरन्त उत्तर देते हैं कि ह्न 'जितनी दूर यहाँ से गांधीजी की मूर्ति है।'

गांधीजी की मूर्ति से हमें व आपको कुछ भी लेना-देना नहीं है। मंदिरजी में गांधीजी की मूर्ति नहीं है; भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति है। तो गांधीजी की मूर्ति के बारे में क्यों कहा ? पार्श्वनाथ की मूर्ति के बारे में ही बताते।

अरे भाई! गांधीजी की मूर्ति से तो कुछ लेना-देना नहीं है; किन्तु क्षेत्र की दूरी को तो समझना है। यहाँ से गांधीजी की मूर्ति कितनी दूर है; इसका आपको ज्ञान है और हमारा मंदिर घर से कितना दूर है; इसका ज्ञान नहीं है; इसलिए हमने गांधीजी की मूर्ति का उदाहरण दिया है।

चित्रपट की भाँति भूत और भविष्य की पर्यायें हमारे श्रुतज्ञान में जानने में आ जाती है तो केवलज्ञान में क्यों नहीं आ सकती।

आगे की गाथा इस विषय को और अधिक स्पष्ट करती है -

जे णेव हि संजाया, जे खलु णट्ठा भवीय पज्जाया।
ते होंति असब्भूदा, पज्जाया णाणपच्चक्खा।।38।।

वास्तव में जो पर्यायें उत्पन्न नहीं हुई हैं तथा जो उत्पन्न होकर नष्ट हो गई हैं; वे सभी अविद्यमान पर्यायें भी ज्ञान-प्रत्यक्ष होती हैं।

भविष्य की पर्यायें, जो अभी पैदा नहीं हुई हैं और भूतकाल की पर्यायें जो असद्भूत हैं अर्थात् वर्तमान की अपेक्षा नहीं हैं। वे सब पर्यायें केवलज्ञान में वर्तमान पर्याय के समान ही जानने में आ रही हैं।

प्रवचनसार गाथा 38 की तत्त्वप्रदीपिका टीका में उदाहरण द्वारा यह विषय सम्यक्रूप से स्पष्ट किया गया है ह्न

'पाषाणस्तम्भ में उत्कीर्ण भूत और भावी देवों (तीर्थंकर देवों) के समान अकम्परूप से स्व-स्वरूप को अर्पित करती हुई, वे पर्यायें विद्यमान ही हैं।' **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

श्रुतपंचमी महोत्सव सानन्द सम्पन्न

1. देवलाली (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक में पर्व के शुभ अवसरपर दिनांक 24 मई, 2004 को जिनवाणी को रथ में विराजमान कर भव्य जुलूस निकाला गया; पश्चात् डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर का प्रासंगिक प्रवचन हुआ।

2. फिरोजाबाद (उ.प्र) : श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 24 मई, 2004 को श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं महिला मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसमें अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

श्रीमती शकुन्तलाजी रपरिया ने एवं श्रीमती मेघा जैन ने हिन्दी एवं अंग्रेजी के माध्यम से श्रुतपंचमी का परिचय दिया। रात्रि में **अदालत के द्वार : पुण्य मोक्षमार्ग या संसार** नामक नाटक का मंचन पण्डित अनंतवीर्य शास्त्री के निर्देशन में किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन पण्डित वीरेन्द्रजी वीर ने किया।

इसी प्रसंग पर श्री राजबहादुर कपूरीदेवी जैन वीतराग-विज्ञान ट्रस्ट द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन बाल शिविर का परीक्षा परिणाम एवं पुरस्कार वितरण समारोह भी हुआ।

3. कुरावली (उ.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जिनालय में पर्व के अवसर पर पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर द्वारा प्रात: पूजन के पश्चात् श्रुतपंचमी विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ। इसके अतिरिक्त दोपहर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

4. अलीगढ़ (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम मंगलायतन में श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर नित्य जिनेन्द्र पूजन एवं श्रुतपंचमी पूजन की गई; पश्चात् पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर ने पर्व के संबंध में विशेष जानकारी देते हुए इसके प्रतिकात्मक तथ्यों को प्रगट किया। छात्र समीर जैन, कोटा ने भी इस संबंध में जानकारी दी।

5. कानपुर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री विक्रम कोठारी की अध्यक्षता में जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के अतिरिक्त ताड़पत्र पर टंकोत्कीर्ण किये हुये तथा हस्त लिखित अत्यन्त प्राचीन शास्त्र साधर्मियों के दर्शनार्थ रखे गये।

ग्रीष्मकालीन परीक्षाओं की तिथि निश्चित

जयपुर (राज.) : श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षाबोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) द्वारा ग्रीष्मकालीन परीक्षाओं की तिथियाँ दिनांक 30 एवं 31 जुलाई तथा 1 अगस्त, 2004 निश्चित की गई है; जिसका विस्तृत परीक्षा कार्यक्रम आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा। जिन संबंधित परीक्षा केन्द्रों ने अभीतक भी प्रवेश फार्म भरकर नहीं भिजवायें है, वे तत्काल परीक्षा फार्म भेजें तथा जिन परीक्षा केन्द्रों को अभीतक भी प्रवेशफार्म नहीं मिले हों, वे कृपया तुरन्त परीक्षा बोर्ड कार्यालय को पत्र लिखकर मंगा लेवें।

ह्न **ओमप्रकाश आचार्य, प्रबन्धक, परीक्षा विभाग**

वैराग्य समाचार

1. दाहोद (गुज.) निवासी श्रीमती चन्द्रकांताबेन शांतिलाल पंचोली का 74 वर्ष की आयु में श्रुतपंचमी पर दिनांक 24 मई, 04 को शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप स्वाध्यायप्रेमी एवं जैन सिद्धान्तों की जानकार थी।

2. श्री प्रकाशभाई शांतिलाल पंचोली का 52 वर्ष की आयु में 22 अप्रैल, 2004 को स्वर्गवास हो गया है। आप अत्यन्त सरलस्वभावी, धार्मिक एवं दयालु प्रकृति के थे।

आप दोनों की स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 200/ह्न रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

3. इन्दौर निवासी श्रीमान कांतिकुमारजी पाटनी की मातुश्री श्रीमती मिश्रीबाईजी पाटनी का 82 वर्ष की उम्र में णमोकार मंत्र श्रवण करते हुए शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप जिनधर्मप्रेमी एवं स्वाध्यायप्रिय महिला थीं। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति को 200/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही कामना है।

प्राप्त दान राशी

सिरसागंज (उ.प्र.) निवासी श्री विनयकुमारजी के सुपुत्र चि. राहुल जैन का विवाह सौ. अनुराधा जैन के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीमती नीरा जैन की ओर से 101/- रुपये प्राप्त हुये।

जैनपथ प्रदर्शक परिवार की ओर से आपको हार्दिक धन्यवाद !

✲ ध्यान दे ✲

श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई की ओर से लगनेवाला आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर 8 अगस्त से 17 अगस्त, 2004 तक टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में लगेगा। आप सभी मुमुक्षु भाई-बहिनों को धर्मलाभ लेने हेतु हमारा भावभीना आमंत्रण है।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जून (द्वितीय) 2004

J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ✲ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127